यहीं मैं आपका आह्वान करूंगी कि आप भी इसी दृष्टि से चलें और स्वाधीनता संग्राम की 150वीं जयंती को मनाने का समय आया है। यह आजादी बड़ी मुश्किल से मिली है, हम सब इसमें साझीदार बनें। आजादी तो दिला दी देशभक्तों ने, मर-मिटने वालों ने और महात्मा गांधी ने, अब इस आजादी को सशक्त बनाते हुए, इस देश को सशक्त बनाने की जिम्मेदारी हमारी है और आर्थिक रूप से सशक्त इस देश को अग्रणी देशों में लाएं इस जिम्मेदारी का हम संकल्प लें। धन्यवाद।

STATEMENTS BY MINISTERS

Justice Rajindar Sachar Committee

THE MINISTER OF DEFENCE (SHRI PRANAB MUKHERJEE): Mr. Chairman, Sir, with your permission I make the following statement:

On 9th March, 2005 a High Level Committee under the chairmanship of Justice Rajindar Sachar was set up "for preparation of a report on the social economic and educational status of the Muslim community of India."

According to the 2001 census the Muslims of India formed the largest minority group of over 138 million, constituting about 13.4% of the country's population. The Muslim community is reportedly afflicted by widespread illiteracy, low income and irregular employment implying a higher incidence of backwardness relative to other religious groups of India.

The High Level Committee was mandated to obtain relevant information from Departments and Agencies of the Central Government, State Governments and also conduct an intensive literature survey to identify published data, articles, research on relative social, economic and educational status of the Muslims of India at the State, Regional and District levels, to address the reasons for backwardness and to formulate appropriate policy to intervene as and when it is necessary.

The Ministry of Defence in its letter dated 14th September, 2005 sent to the High Level Committee clearly brought out that the existing policy of the Government on recruitment in the Armed Forces is based on merit and is open to every citizen of the country including the members of the Muslim community without any discrimination on the basis of their caste, creed, religion or region. The Armed Forces are professional, apolitical, secular and the most disciplined force the country has today. Indian Armed Forces have an all India orientation in which each State contributes its fair share of manpower to the Armed Forces.

However, in reply to the letters received from the High Level Committee, Naval Headquarters provided some indicative statistics regarding Civilian personnel in the Navy. Some data were also provided by the Indian Air Force. No such information was provided by the Indian Army. No survey has been conducted or is proposed to be conducted for the compilation of any other statistics than those maintained on the existing database of the Armed Forces.

On 17th January, 2006 on the direction of the Raksha Mantri, Defence Secretary met Justice Rajindar Sachar and stressed the secular and apolitical nature of the Armed Forces. On 17th February, 2006 the Defence Secretary on the directions of Raksha Mantri met Justice Rajindar Sachar again to explain that the recruitment in the Armed Forces is based on merit and is open to every citizen of the country including Scheduled Castes, Scheduled Tribes and Backward Classes without any discrimination on their castes, creed, religion or region. A letter to this effect was also sent to Justice Rajindar Sachar.

श्रीमती सुषमा स्वराज (उत्तरांचल): सभापति जी, धन्यवाद।

सभापति जी, मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहती हूं, उनके वक्तव्य का प्रथम पैराग्राफ यह कहता है,

"On 9th March, 2005 a High Level Committee under the chairmanship of Justice Rajindar Sachar was set up for preparation of a report on the social economic and educational status of the Muslim community of India."

सभापति जी, यह प्रेज़िडेंशियल एड्रेस है, राष्ट्रपति जी का अभिभाषण है, वह अभिभाषण जिस पर अभी हम चर्चा कर रहे हैं। वर्तमान सत्र में अभी उसी पर चर्चा चल रही है और स्टेटमेंट से पहले तक प्रभा जी उसी पर बोल रही थीं।

राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के पैरा - 33, पेज -11 में यह कहते हैं कि

Para 33 on page 11 "a Committee under Justice Rajindar Sachar is studying in-depth the condition of minorities and is expected to recommend steps for their economic and social development and empowerment."

आज यह कह सकते हैं कि यह टाइपोग्राफिकल एरर है। वैसे तो प्रणबदा जब कोई बात राष्ट्रपति के मुंह से कहलवाई जाती है तो वह टाइपोग्राफिकल एरर नहीं हो सकती। यह वह बात है जो राष्ट्रपति जी के मुखारबिन्द से सेंट्रल हॉल में कही गई, तमाम सांसदों ने वहां बैठकर सुनी

और पूरे देश ने टेलीविजन के माध्यम से सुनी। लेकिन मैं यह भी कहना चाहती हूं कि यह टाइपोग्राफिकल एरर नहीं है, यह वह विसंगति है जो बार-बार आपके मुख से प्रदर्शित हो रही है। सभापति जी, यह नोटिफिकेशन है राजेन्द्र सच्चर कमेटी का, इसकी तारीख है 9 मार्च, 2005,

Subject : Constitution of a High-level Committee to prepare a report on the social, economic and educational status of the Muslim community of India.

और 16 मई को इस कमेटी के गठन के दो महीने बाद प्रधान मंत्री कांग्रेस की कार्यसमिति में भाषण देते हैं और उस भाषण में कहते हैं कि—

"For the first time a High-level Committee of experts led by Justice Rajindar Sachar is putting together information on the social and economic status of the minorities of India."

यह कभी मुस्लिम कभी मायनोरिटी, कभी मुस्लिम कभी मॉयनोरिटीज यह न टाइपोग्राफिकल एरर है, न कोई आसान और साधारण भूल है बल्कि यह वह संकीर्णता है जो आपकी सोच में नए तौर पर आ रही है, लेकिन अभी आपके मन के अंदर रची बसी नहीं है। इसलिए कभी-कभी आप मुस्लिम शब्द का इस्तेमाल करते हैं और कभी मॉयनोरिटी शब्द का इस्तेमाल करते हैं। सभापति जी, 55 वर्ष तक ये देश को मॉयनोरिटीज और मजॉरिटी में बांटते रहे, हालांकि हमने उसका भी विरोध किया था, लेकिन कम से कम जब हम अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक कहते हैं तो अल्पसंख्यक कहते ही हमारी आंख में मुस्लिम आता है, सिख आता है, ईसाई आता है, बौद्ध आता है, जैन आता है, पारसी आता है और अगर मैं यों कहूं कि हिन्दुओं को छोड़कर बाकी तमाम अल्पसंख्यक हैं तो यह अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक यह शब्दावली तो पिछले 55 वर्षों से प्रचलित है। लेकिन यह पहली बार हुआ है, पहली बार हुआ है मैं रिपीट कर रही हूं, यह पहली बार हुआ है कि आपने अब मॉयनोरिटीज को भी आपस में बंटवाने का सिलसिला शुरू कर दिया। यह पहली बार हुआ है कि कोई कमेटी जो बनी है केवल मुस्लिम समुदाय के शैक्षणिक, आर्थिक और सामाजिक पिछड़ेपन को देखने के लिए। मैं कहना चाहती हूं प्रणबदा, कोई भी मुसीबत, कोई भी आर्थिक पिछड़ापन जाति और धर्म को देखकर नहीं आता, हर जाति में आर्थिक पिछड़ेपन के लोग हैं और शैक्षणिक पिछड़ापन उस आर्थिक पिछड़ो में से निकलता है और जहां तक सामाजिक पिछड़ापन का सवाल है, वह भी केवल ...(व्यवधान)

श्री राशिद अल्वी (आन्ध्र प्रदेश): सर, ...(व्यवधान)

श्री एस॰ एस॰ अहलुवालिया (झारखंण्ड): बैठिए। ...(व्यवधान)

श्री सभापति: वे बैठ जाएंगे ...(व्यवधान) उनको बोलने दीजिए। ...(व्यवधान) आप बैठिए, बैठिए। ...(व्यवधान)

श्री एस॰ एस॰ अहलुवालिया: इनको कुछ समझ आता है। ...**(व्यवधान)**

श्रीमती सुषमा स्वराज: पर मैं तो क्लेरिफिकेशन पूछ रही हूं आपको क्या हो रहा है। ... **(व्यवधान)**

श्री नीलोत्पल बसु: (पश्चिमी बंगाल): सर, आपकी जो जिम्मेदारी है वह सुरेन्द्र जी निभाना चाहते हैं, आप थोड़ा उनको बता दीजिए।

श्री सभापति: मेरी जिम्मेदारी सभी निभाएं तो बहुत ही अच्छा है। ...**(व्यवधान)**

श्रीमती सुषमा स्वराज: क्या वे निभा रहे हैं। ...**(व्यवधान)**

श्री सभापति: आप बैठ जाइए न, बैठिए-बैठिए। ...**(व्यवधान)**

श्री एस॰ एस॰ अहलुवालिया: मैं मॉयनारिटी कम्युनिटी को बिलॉग करता हूं।

श्री दीपांकर मुखर्जी (पश्चिमी बंगाल): आप बैठिए। ...**(व्यवधान)**

श्री एस॰ एस॰ अहलुवालिया: मैं क्या आपके कहने से बैठूंगा। ...**(व्यवधान)** यह क्या * ....**(व्यवधान)**

श्री सभापति: बैठिए, आप लोग। ...**(व्यवधान)** माननीय सदस्य, बैठिए, हो गई बात। ...**(व्यवधान) आप बैठिए** ...(व्यवधान)

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: Sir, are you going to allow this? *(Interruptions)* यह क्या हो रहा है। Sir, what is this happening? *(Interruptions)* Sir, are you allowing this? *(Interruptions)*

श्री सभापति: आप बैठिए ...(व्यवधान)

SHRI NILOTPAL BASU: Some Members are trying to assert the role of the Chair.

श्री सभापति: मैं कह रहा हूं बैठिए ...(व्यवधान) इम्पोर्टेंट इश्यू है चलने दीजिए। आप बैठिए, बैठिए। ...**(व्यवधान)**

श्री एस॰ एस॰ अहलुवालिया: यह * ...**(व्यवधान)**

श्री सभापति: बैठिए, यह * नहीं है। ...**(व्यवधान)** यह एक्सपंज करता हूं। ...**(व्यवधान)**

श्री दीपांकर मुखर्जी: सर, इसको एक्सपंज कराइए। ...**(व्यवधान)**

श्री सभापति: हां, करा दिया। ...**(व्यवधान)**

* Expunged as ordered by the Chair.

श्री सभापति: आप बैठ जाइये। ...(**व्यवधान**) आप बैठ जाइये। ...(**व्यवधान**) आप बैठ जाइये। ...(**व्यवधान**) आप बैठिये। ...(**व्यवधान**) चलिये।

श्रीमती सुषमा स्वराज: सभापति महोदय, मुझे समझ में नहीं आ रहा है ...(**व्यवधान**)

श्री नीलोत्पल बसु: इनको तकलीफ होती है। ...(**व्यवधान**)

श्री सभापति: वह बोल रही हैं, आप बैठ जाइये। ...(**व्यवधान**)

श्री दीपांकर मुखर्जी: आप खड़े रहेंगे, तो हम भी खड़े रहेंगे। ...(**व्यवधान**)

श्री सभापति: मैंने उनको रोक दिया है। ...(**व्यवधान**) माननीय सदस्य ...(**व्यवधान**)

श्रीमती सुषमा स्वराज: सभापति जी। ...(**व्यवधान**)

श्री सभापति: आप बोलिये। ...(**व्यवधान**)

श्री नीलोत्पल बसु: हम इनकी तरह दल-बदलू नहीं हैं। ...(**व्यवधान**) हम ऐसे नहीं हैं। हम कोलकाता से आये हैं, एक पार्टी से आये हैं। ...(**व्यवधान**)

श्री सभापति: देखिये। ...(**व्यवधान**) आप बैठ जाइये। ...(**व्यवधान**) अहलुवालिया जी, आप बैठ जाइये। आप भी बैठ जाइये। ...(**व्यवधान**) चलिये, आगे चलिये। ...(**व्यवधान**)

श्रीमती सुषमा स्वराज: सभापति जी, मुझे एक चीज़ समझ में नहीं आती है कि जब अहलुवालिया जी खड़े होते हैं, तो नीलोत्पल जी को खल जाते हैं और जब राशिद अल्वी खड़े होते हैं, तो ...(**व्यवधान**)

श्री सभापति: वह बैठ गये, अब नहीं खड़े हैं। वे मेरे कहने से बैठ गये थे। ...(**व्यवधान**)

श्रीमती सुषमा स्वराज: मैं शांति से अपनी बात कह रही थी। ...(**व्यवधान**)

श्री सभापति: अच्छा, आप सब्जेक्ट पर आइये। आप सब्जेक्ट पर आइये। ...(**व्यवधान**)

श्रीमती सुषमा स्वराज: सर, मैं विषय पर बोल रही हूं। ...(**व्यवधान**)

श्री सभापति: आप पिछली बात भूल जाइये और विषय पर आइये। ...(**व्यवधान**)

श्रीमती सुषमा स्वराज: मैंने कोई बात गलत कही, मैंने कोई बात असंसदीय कही? ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: नहीं।

श्रीमती सुषमा स्वराज: मैंने चार बातें कहीं और चारों के प्रमाण सामने रख दिये। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: ठीक है, अब आगे चलिये। ...(**व्यवधान**)

श्रीमती सुषमा स्वराज: मैंने चारों को कागज से पढ़ा। ...(**व्यवधान**)... फिर क्यों? सभापति जी, मैं रक्षा मंत्री जी से यह पूछना चाहती हूं कि आपने यूपीए की सरकार आने के बाद भी माइनारिटी शब्द का प्रयोग करते हुए माइनारिटी कमीशन बनाया, माइनारिटी ऐजुकेशनल इंस्टीट्यूशन कमीशन बनाया, मिनिस्ट्री ऑफ माइनारिटी अफेयर्स बनाई, ठीक है, अल्पसंख्यकों के लिए आपने यह सब किया। लेकिन क्या आवश्यकता आन पड़ी कि उन माइनारिटीज़ में से भी केवल एक समुदाय को लेकर के आपने एक कमेटी का गठन कर दिया। मैं पूछना चाहती हूं और आपसे कहना चाहती हूं रक्षा मंत्री जी, इस तरह की संकीर्ण सोच विभाजन के बीज बोती है, इस तरह की संकीर्ण सोच द्विराष्ट्र के सिद्धांत की नींव डालती है, इसलिए मैं आपसे कहना चाहती हूं कि यह तो आपने बहुत सही किया कि जो शंकाएं हमारे मन में थीं, उनको अपने वक्तव्य से दूर कर दिया कि आर्म्स फोर्सेज में इस तरह का कोई डाटा न आप रखते हैं और न देंगे। मुझे खुशी है कि आपके निर्देश पर डिफेंस सेक्रेटरी जाकर के जस्टिस राजेन्द्र सच्चर से मिले और उन्होंने कहा कि हमारे पास इस तरह का कोई डाटा उपलब्ध नहीं है। यह बहुत अच्छा किया, लेकिन मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि यह जो नई संकीर्णता आपकी सोच में आ रही है, इसको समाप्त करते हुए क्या आप इस कमेटी का स्वरूप भी बदलकर माइनारिटी करेंगे, जिसमें बाकी तमाम अल्पसंख्यकों के बारे में भी अगर आपको डाटा इकट्ठा करना है तो आप इकट्ठा करें? और क्या अन्य गरीबों के बारे में भी क्योंकि बीपीएल हमारे यहां है, बिलो पावर्टी लाइन, उसमें वे सारे आंकड़े हमारे पास मौजूद होते हैं कि देश में कितने लोग गरीब हैं, तो मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि अगर गरीबी से लड़ना है, अगर अशिक्षा से लड़ना है, अगर पिछड़ेपन से लड़ना है, तो क्या तमाम देश के जाति और धर्म से ऊपर उठकर ये आंकड़े आप इकट्ठा करेंगे? यदि आप ऐसा करेंगे तो पूरा देश आपकी वाहवाही करेगा, क्योंकि वह इंटरवेंशन तमाम गरीबों को चाहिए और अल्पसंख्यक समुदाय के भी तमाम लोगों को चाहिए। अभी अहलुवालिया जी ने माइनारिटीज़ की बात कही कि वह माइनारिटी हैं। उनके यहां भी मज़हबी सम्प्रदाय के लोग हैं, सिखों में जो सबसे ज्यादा दलित और उपेक्षित हैं, फिर कह देंगे कि पॉलिटिकल हो गया, मज़हबी सम्प्रदाय के बैठे हुए एक गवर्नर से जो आपने डर्टी काम करवाना था, वह करवा लिया, उन जैसे लोगों को आप इस्तेमाल करते हैं इस काम के लिए और जब आंकड़ा गिनाना होता है, तो आप केवल उस समुदाय को याद करते हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: आप इस विषय पर आइये। ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: मेरा सीधा प्रश्न रक्षा मंत्री जी से यह है कि क्या इस कमेटी के स्वरूप को बदलकर आप माइनॉरिटी के लिए कार्य करेंगे। मैं तो कहती हूं कि और भी ज्यादा अच्छा होता यदि आप तमाम गरीबों के लिए यह कार्य करें, ताकि यह संकीर्ण सोच जो उभरी है वह जितनी जल्दी समाप्त हो जाये, देश के हित में उतना अच्छा होगा।

श्रीमती वृंदा कारत (पश्चिमी बंगाल): धन्यवाद सभापति महोदय, रक्षा मंत्री जी का बयान अभी हम लोगों ने सुना और वह कॉपी भी हमारे सामने है। मैं रक्षा मंत्री जी का स्वागत करना चाहती हूं कि उन्होंने अपने बयान से, जो एक गलत प्रचार हो रहा था, राजेन्द्र सच्चर कमेटी के संबंध में, उसको स्पष्ट करने का प्रयास किया है। हालांकि मैं समझती हूं कि अगर यह बयान थोड़ा पहले वे देते तो शायद जो साम्प्रदायिक ताकतें हैं, जिनके पास कोई एजेंडा नहीं है और जो नॉलेज से भी डरते हैं। इनफॉर्मेशन से भी डरते हैं, क्योंकि उनका यही इतिहास है कि इनफॉर्मेशन जितनी कम हो, उतनी सही है, क्योंकि बगैर इनफॉर्मेशन की ज़मीन पर वे अपना साम्प्रदायिक उन्माद फैला सकते हैं और आज हमने वह सुना भी है, सुषमा जी से, उन्होंने कहा, माइनॉरिटीज़ के बारे में क्यों नहीं कहते हैं? सर,मैं प्रणब जी से, रक्षा मंत्री जी से पूछना चाहती हूं कि क्रिश्चियन संबंध में, जो एक बिल्कुल प्रचार था, संघ परिवार के, उनके घटक के और उनके ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: वह मत लाइए आप। सीधे आ जाइए। ...(व्यवधान)...

श्रीमती वृंदा कारत: सर, प्लीज़ मुझे कहने दीजिए ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: इनसे पूछ लीजिए। संघ और ...(व्यवधान)... उनको शामिल मत करिए ...(व्यवधान)...

श्रीमती वृंदा कारत: प्लीज़ सर। माइनॉरिटीज़ का सवाल उठाया गया, मैं जानना चाहती हूं ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: इनको छोड़िए आप। ...(व्यवधान)...

श्री विक्रम वर्मा (मध्य प्रदेश): यह कहां से आ गया? ...(व्यवधान)...

श्रीमती वृंदा कारत: और ये जो बिल्कुल प्रचार कर रहे हैं ...(व्यवधान)... क्रिश्चियन माइनॉरिटीज़ के बारे में मैं यह जानना चाहती हूं, प्रणब दादा से कि क्या ...(व्यवधान)...

श्री विक्रमवर्मा: ये साम्प्रदायिकता ...(व्यवधान)... पैदा करने की कोशिश कर रही हैं। ...(व्यवधान)...

श्री कृपाल परमार (हिमाचल प्रदेश): स्वामी रामदेव के बारे में ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: अरे, आप छोड़िए स्वामी रामदेव को ...(व्यवधान)...

श्रीमती वृंदा कारत: कनवर्शंस के बारे में, जो एक बिल्कुल गलत प्रचार ...(व्यवधान)...

श्री विक्रम वर्मा: आप कह रही हैं कि इनफॉर्मेटिक है ...(व्यवधान)... कौन सी इनफॉर्मेशन थी? कौन सी ऑथेंटिक इनफॉर्मेशन थी? ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: अरे आप छोड़िए। क्यों रामदेव जी को ला रहे हैं? ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती वृंदा कारत: कि कनवर्शंस के बारे में ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: बैठिए, बैठिए। आप बैठिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया: स्वामी रामदेव के बारे में पुछवा लीजिए। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please take your seat. ...*(Interruptions)*... Please take your seat. बैठिए, बैठिए।

श्रीमती वृंदा कारत: क्रिश्चियंस का ...(**व्यवधान**)... कनवर्शन की बात दूर रही, उनकी संख्या हमारे देश में घट रही है, ग्रोथ रेट कम हो रहा है। क्या उसके बारे में भी, और विशेषकर, जो दलित क्रिश्चियंस हैं, जो दलित क्रिश्चियंस हिन्दू टेम्पल्स में न जाने के कारण मजबूर होकर अनटचेबिलिटी के शिकार हो रहे हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: यह कहां विषय आ गया? ...(**व्यवधान**)... यह कोई विषय है? ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती वृंदा कारत: उनका धर्म परिवर्तन करना पड़ा था। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: वृंदा जी, यह विषय नहीं है। ...(**व्यवधान**)... यह विषय नहीं है वृंदा जी। ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती वृंदा कारत: उन दलित क्रिश्चियंस के बारे में क्या हमारी यह सरकार उतनी संवेदनशीलता दिखाने के लिए तैयार होगी या नहीं, इसका जवाब चाहिए। आप दीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: ठीक है, ठीक है। अब बैठ जाओ। ...(**व्यवधान**)...

SHRIMATI BRINDA KARAT: Please, Sir, I am just coming to the other point.

श्री सभापति: आप दूसरे विषय पर ...(**व्यवधान**)...

SHRIMATI BRINDA KARAT: Sir, these are my questions.

श्री सभापति: इसमें क्वेश्चंस कहां आ गए? ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती वृंदा कारत: सर, कैसे हो सकता है? ...(**व्यवधान**)... ये मेरे सवाल हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: इसमें क्वेश्चंस कहां आ गए? ...(**व्यवधान**)...

SHRIMATI BRINDA KARAT: Sir, I am putting questions. मैं भाषण नहीं दे रही हूं, मैं सवाल कर रही हूं। ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: आप जानकारी कर लीजिए। ...(व्यवधान)...

श्रीमती वृंदा कारत: दूसरी बात यह है, सर ...(व्यवधान)... यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि जो लोग तुष्टिकरण की बात कहते हैं, वे उस सूचना को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं कि हकीकत यह है कि हमारे देश, आज़ाद हिन्दुस्तान की 58 साल के बाद यह हकीकत है कि मुस्लिम माइनॉरिटी, कम्युनिटी भेदभाव की शिकार है–रोज़गार के संबंध में शिकार है, शिक्षा के बारे में शिकार है, ज़मीन की ऑनरशिप के बारे में शिकार है, ऑर्गेनाइज्ड सेक्टर में, अगर आप संख्या देखेंगे तो मुसलमानों की संख्या सबसे कम है और राजनैतिक क्षेत्र में भी सबसे कम है। इसलिए सर, What we want to know कि जो आपने कहा कि ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: आप डिस्टर्ब मत करिए। ...(व्यवधान)...

श्रीमती माया सिंह (मध्य प्रदेश): आज़ादी के बाद किसने सबसे ज्यादा राज़ किया? ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: कृपया बैठिए। बोलने दीजिए ...(व्यवधान)... Please, take your seat ...*(interruptions)*... I won't allow this.

श्रीमती वृंदा कारत: इसलिए जो लोग यह मानकर चल रहे हैं, उनके जो गुरु जी की जो ...(व्यवधान)... उन्होंने सीखा ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: देखिए, दूसरे सब्जेक्ट्स मत लाइए।...(व्यवधान)... मैं अलाऊ नहीं करूंगा। वृंदा जी, मैं अलाऊ नहीं करूंगा ये सब्जेक्ट ...(व्यवधान)... आप बैठिए, बैठिए।

श्रीमती वृंदा कारत: सर, जो इनके गुरुजी ने सिखाया, Minorities have to be subordinate in this country.

श्री कृपाल परमार: कौन से गुरु जी, रामदेव जी या हमारे गुरुजी ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: माइनॉरिटीज़ के बारे में जो आपने कहा, वह बिल्कुल ठीक है। ...(व्यवधान)...

श्रीमती वृंदा कारत: मैं प्रणब दादा से यह पूछना चाहती हूं, रक्षा मंत्री जी से पूछना चाहती हूं कि to ensure that minorities are not subordinate as has been spoken by the RSS gurus and Golwarkar Saheb, Savarkarji. सर, उसके विपरीत मैं यह चाहती हूं कि आप इस हाउस में यह आश्वासन दें कि बहुत स्वामीज़ हुए हैं, डेटा कलेक्शन बहुत

हुआ है लेकिन ठोस रूप में इन तमाम सवालों पर आप क्या करेंगे? दलित क्रिश्चियंस की ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: बस, अब बहुत हो गयी बात। ...(व्यवधान)...

श्रीमती वृंदा कारत: रिज़र्वेशन के बारे में आप मानेंगे और अक्लियतों के बारे में, विशेषकर मुस्लिम माइनारिटीज़ के बारे में जो जबर्दस्त आज असुरक्षा की भावना, विशेषकर राजस्थान के अंदर ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: बस हो गयी बात ...(व्यवधान)... किसी स्टेटमेंट का ...(व्यवधान)... Please conclude.

श्रीमती वृंदा कारत: मध्य प्रदेश के अंदर, छत्तीसगढ़ के अंदर, जहां संघ परिवार का राज हो, उन प्रदेशों में आप क्या करने जा रहे हैं, इसे कृपया आप स्पष्ट करें।

श्री सभापति: बस ठीक है। हो गया। Please, take your seat. श्री संतोष बागड़ोदिया।

श्रीमती माया सिंह: सभापति जी, उन्होंने गुरुजी की बात कही है, गुरुजी शब्द किसके लिए इस्तेमाल हुआ है? ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: आप बैठ जाइए। ...(व्यवधान)... आज़मी जी, आप बोलना चाहेंगे? आपने पहले नाम नहीं दिया।

श्री अबू आसिम आज़मी (उत्तर प्रदेश): सर, मुझे केवल दो मिनट बोलने दीजिए।

†[شری ابو عاصم اعظمی : سر، مجھے صرف دو منٹ بولنے دیجئے۔]

श्री सभापति: नहीं, दो मिनट की बात नहीं है। आपने पहले नाम नहीं दिया और मंत्री महोदय को मैंने तीन सदस्यों के नाम पर assurance दिया था कि वे अपना क्लैरिफिकेशन करके जल्दी दूसरी जगह चले जाएं, जहां उन्हें जाना है।

श्री अबू आसिम आज़मी: मंत्री महोदय, मेरा भी नाम उसमें जोड़ लें। केवल दो मिनट मुझे बोलना है।

†[شری ابو عاصم اعظمی : منتری مہودے، میرا بھی نام اس میں جوڑ لیں۔ صرف دو منٹ مجھے بولنا ہے۔]

श्री सभापति: दो मिनट नहीं, देखिए, You should be cautious. आपको मालूम था कि पांच बजे स्टेटमेंट होगा, जिन लोगों ने नाम देने थे, दे दिए बस! अब मैं allow नहीं करूंगा।

---

†Transliteration in Urdu Script.

SHRI ABU ASIM AZMI: Sir, I will take care next time. मंत्री जी, मैं सिर्फ एक मिनट बोलना चाहता हूं। मैं सिर्फ एक मिनट बोलना चाहता हूं। ...(व्यवधान)... मंत्री जी मुझे इजाजत दे देंगे।

†[شری ابو عاصم اعظمی : سر، آئی ول ٹیک کیئر نیکسٹ ٹائم۔ منتری جی میں صرف ایک منٹ بولنا چاہتا ہوں۔ میں صرف ایک منٹ بولنا چاہتا ہوں...مداخلت....منتری جی مجھے اجازت دیدیں گے۔]

THE MINISTER OF DEFENCE (SHRI PRANAB MUKHERJEE): I am not the Chairman. The Chair has to give time. Who am I?

श्री सभापति: मैंने टाइम दिया है, तो टाइम देकर ...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, मैं मुस्लिम कम्युनिटी का हूं।

†[شری ابو عاصم اعظمی : سر، میں مسلم کمیونٹی کا ہوں۔]

श्री सभापति: यह कम्युनिटी के हिसाब से थोड़े ही होता है। कोई किसी कम्युनिटी का हो, आप उस कम्युनिटी के हैं, तो cautious होते। अच्छा, दो मिनट बोल लीजिए। दो मिनट से तीसरा मिनट नहीं दूंगा।

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, बहुत-बहुत शुक्रिया कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। मेरी गलती है कि मैंने नाम नहीं दिया था। ...(व्यवधान)...

†[شری ابو عاصم اعظمی "اتر پردیش" : سر بہت بہت شکریہ کہ آپ نے مجھے بولنے کا موقع دیا۔ میری غلطی ہے کہ میں نے نام نہیں دیا تھا....مداخلت....]

SHRI ARUN JAITLEY (Gujarat): Will the time also be allotted on the basis of religion?

श्री कृपाल परमार: सर, सदन में समय भी इसी आधार पर दिया जाएगा?

श्री सभापति: ठीक है, अब दे दिया है।

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, जिस वक्त यह मुल्क आज़ाद हुआ, उस वक्त इस मुल्क में मिलिट्री में, Armed Forces में 32 परसेंट मुसलमान थे। आज इतनी तरक्की होने के बाद, इस मुल्क की फोर्सेज में मुसलमान 2 परसेंट रह गए हैं। मैं कह दूं कि आज़ादी के बाद आज तक सिर्फ एक फोर्स का चीफ – इदरीश लतीफ – वह भी कांग्रेस के जमाने में नहीं, बल्कि जनता पार्टी के जमाने में एक चीफ बनाया गया फोर्सेज का। जैसे अभी वृंदा जी ने और बहुत सारे लोगों ने कहा है कि मुसलमानों के साथ हर जगह डिस्क्रिमिनेशन हो रहा है। तालीम में हो रहा है, नौकरी

†Transliteration in Urdu Script.

में हो रहा है, बिजनेस में हो रहा है, पोलिटिक्स में हो रहा है, हर जगह हो रहा है, मैं यह कहना चाहता हूं कि इनकी आंखों में इतनी किरकिरी रही कि सच्चर कमेटी बन गई। जब एक तरफ इसी देश में जाट रेजिमेंट है जिनका नारा है – ''जाट बलवान, जय भगवान'', सिख रेजिमेंट है जिसका नारा है ''जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल'', बिहार रेजिमेंट है जिसका नारा है ''जय बजरंग बली'', ''बिरसा मुंडा की जय'', डोगरा रेजिमेंट है ''ज्वाला माता की जय'', मराठा इन्फैंटरी है ''छत्रपति शिवाजी महाराज की जय'', राजपूताना इन्फैंटरी है ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: यह सबको मालूम है।

श्री अबू आसिम आज़मी: जब ये सब चीज़ें हैं, जब फौज में मौलवी की भर्ती होती है, priest की भर्ती होती है, पंडित की भर्ती होती है, तो फिर मुसलमानों का सर्वे करने से क्या दिक्कत हो गई है? मैं कहना चाहता हूं मंत्री जी से कि यह सर्वे होना चाहिए और मुसलमानों को, जो इस देश के वफादार हैं, जब भी सरहदों पर ज़रूरत पड़ी है – पाकिस्तान हमारा एक मुसलमान भाई है, यहां छोड़कर चला गया – लेकिन मुसलमानों ने कभी भी उनके हाथ नहीं काटे हैं पाकिस्तान के खिलाफ गोली चलाने के लिए। उन्होंने यह प्रूफ किया है कि मुसलमान इस देश का वफादार है, इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि यह सर्वे पूरे देश में होना चाहिए और मुसलमानों को ईमानदारी के साथ फौज में नौकरी मिलनी चाहिए, ताकि वे अपनी वफादारी दिखा सकें। आपने मुझे समय दिया, इसके लिए बहुत-बहुत शुक्रिया।

شری ابوعاصم اعظمی : سر، جس وقت یہ ملک آزاد ہوا، اس وقت اس ملک میں مٹری میں آرمڈ فوس میں ۳۲ فیصد مسلمان تھے۔ آج اتنی ترقی ہونے کے بعد اس ملک کی فورسیز میں مسلمان ۲ فیصد رہ گئے ہیں۔ میں کہہ دوں کہ آزادی کے بعد آج تک صرف ایک فورس کا چیف اور یس لطیف، وہ بھی کانگریس کے زمانے میں نہیں بلکہ جنتا پارٹی کے زمانے میں ایک چیف فورسیز کا بنایا گیا تھا۔ جیسا ابھی ورندا جی نے اور بہت سارے لوگوں نے کہا ہے کہ مسلمانوں کے ساتھ ہر جگہ ڈسکریمنیشن ہو رہا ہے۔ تعلیم میں ہو رہا ہے، نوکری میں ہو رہا ہے، بزنس میں ہو رہا ہے، پولیٹکس میں ہو رہا ہے، ہر جگہ ہو رہا ہے۔ میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ ان کی آنکھوں میں اتنی کرکری رہی ہے کہ سچر کمیٹی بن گئی۔ جب ایک طرف اسی دیش میں جاٹ رجمنٹ ہے جن کا نعرہ ہے ''جے بلوان، جے بھگوان''۔ سکھ رجمنٹ ہے جس کا نعرہ ہے ''جو بولے سونہال ست شری اکال''۔ بہار رجمنٹ ہے جس کا نعرہ ہے، ''جے بجرنگ بلی''، ''برسا منڈا کی جے''۔ ڈوگرہ رجمنٹ ''جوالا ماتا کی جے''۔ مراٹھا انفنٹری ہے ''چھترپتی شیواجی مہاراج کی جے''۔ راجپوتانہ انفنٹری ہے ...مداخلت...

†Transliteration in Urdu Script.

شری سجاپتی : سب کو معلوم ہے جو ہے۔

شری ابوعاصم اعظمی : جب یہ سب چیزیں ہیں سر، جب فوج میں مولوی کی بھی بھرتی ہوتی ہے، پریسٹ کی بھی بھرتی ہوتی ہے، پنڈت کی بھی بھرتی ہوتی ہے، تو پھر مسلمانوں کا سروے کرنے سے کیا دقت ہوگئی ہے؟ میں کہنا چاہتا ہوں منتری جی سے کہ یہ سروے ہونا چاہئے۔ اور مسلمانوں کو جو اس دیش کے وفادار ہیں۔ جب بھی سرحدوں پر ضرورت پڑی ہے، پاکستان ہمارا ایک مسلمان بھائی ہے، یہاں چھوڑ کر چلا گیا۔ لیکن مسلمانوں نے کبھی بھی ان کے ہاتھ نہیں کانپے ہیں پاکستان کے خلاف گولی چلانے کے لئے۔ انہوں نے یہ پروف کیا ہے کہ مسلمان اس دیش کا وفادار ہے، اس لئے میں کہنا چاہتا ہوں کہ یہ سروے پورے دیش میں ہونا چاہئے اور مسلمانوں کو ایمانداری کے ساتھ فوج میں نوکری ملنی چاہئے تاکہ وہ اپنی وفاداری دکھا سکے۔ آپ نے مجھے وقت یا اس کے لئے بہت بہت شکریہ۔

"ختم شد"

प्रो॰ राम देव भंडारी (बिहार): सभापति महोदय, मैं भी एक मिनट बोलना चाहता हूं।

श्री सभापति: आप मुझे क्षमा करें। ...(**व्यवधान**)... अब क्षमा करें, नहीं...आप रहने दीजिए। यह डिबेट शुरू हो जाएगी और यह अच्छा नहीं है। ...(**व्यवधान**)...

प्रो॰ राम देव भंडारी: मान्यवर, इस देश में जब कभी माइनॉरिटी के बारे में चर्चा होती है, तो इस देश में ऐसे दल हैं, जो उसका सम्प्रदायीकरण करते हैं। सभी जानते हैं कि इस देश के मुसलमानों का इस देश को आजाद करने में सेना में ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: आप तो इनसे प्रश्न पूछिए। इनसे स्पष्टीकरण पूछिए।

प्रो॰ राम देव भंडारी: बॉर्डर पर लड़ाई लड़ने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। उनकी आर्थिक स्थिति क्या है, सामाजिक स्थिति क्या है, शैक्षणिक स्थिति क्या है, इस पर अगर कोई सरकार सर्वेक्षण कराती है, समीक्षा करती है तो क्या ऐतराज़ है किसी को?

श्री सभापति: ठीक है, गवर्नमेंट करा रही है।

प्रो॰ राम देव भंडारी: हम अच्छी तरह जानते हैं, हमारे एक सदस्य कह रहे थे कि आज़ादी के समय उनका रिप्रेज़ेंटेशन क्या था और इस समय घटकर कितना हो गया है? इस देश में जब वे रह रहे हैं, तो क्या उनको कोई अधिकार नहीं है कि देश की मूल धारा में वे शामिल हों? जब यह बात होती है तो ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: आप इधर जवाब दे रहे हैं या उनसे जानकारी ले रहे हैं? इधर जवाब देने की जरूरत नहीं है।

प्रो॰ राम देव भंडारी: हिंदू-मुसलमान के नाम पर फिर से देश को बांटने का प्रयास ये करते हैं, बांटने की राजनीति ये करते हैं और आरोप लगाते हैं दूसरों पर! इसलिए मैं सरकार से सहमत

हूं। इनके पास कोई मुद्दा नहीं है, इस संबंध में इनकी किसी बात पर ध्यान नहीं दिया जाए और सरकार मुस्लिमों का सर्वेक्षण कराए और उनके हित में जो भी कदम उठाना पड़े, वह कदम उठाए, धन्यवाद।

विपक्ष के नेता (श्री जसवन्त सिंह) : माननीय सभापति महोदय, न तो मुझे कोई स्पष्टीकरण चाहिए था और न ही मैं इस बहस में शरीक हो रहा था। अभी एक-दो साहिबान ने सन् 1947 से पहले भारत के कुछ आंकड़े दिए हैं। उसमें कहा है कि इतने प्रतिशत है। चेयरमैन साहब, मैं यह बताना चाहूंगा कि जो प्रतिशत था, उसमें आंकड़ों से इसमें कोई ओपिनियन का कोई सवाल नहीं है। हम सही आंकड़ों पर चलें तो अच्छा रहेगा, वह अनडिवाइडिड पंजाब था। उस अनडिवाइडिड पंजाब में जो आज हरियाणा, हिमाचल, वेस्ट पंजाब और ईस्ट पंजाब हो गया है, तो उसमें जो भर्ती होती थी, जैसे राजस्थान का झुनझुनू जिला है, उसमें जो भर्ती होती है, उसमें जाट भी हैं, राजपूत भी हैं और अन्य भी हैं। इससे झुनझुनू जिले का प्रतिशत बढ़ जाता है। आज देश वह जिला है जिसमें सबसे ज्यादा भर्ती झुनझुनू से होती है। तहसील में सबसे ज्यादा भर्ती शेरगढ़ राजस्थान से होती है। उसी तरह पंजाब से होती थी और जब पंजाब का विभाजन हुआ तो इसको लेकर अकाली दल का एक मसला बन गया था। अकाली दल भी यही बात कहते थे कि हमारा प्रतिशत कम हो गया है। मेरा निवेदन है कि इस मसले को बहुत रगड़ लिया है। अच्छा है, इस मसले को और न रगड़ें क्योंकि इसके साथ-साथ फौजें रगड़ी जा रही हैं। अब हम तो अपनी सियासती लड़ाई लड़ते रहेंगे, इन आंकड़ों को इधर से उधर उछालकर, लेकिन उसका क्या परिणाम हो रहा है, प्रणब बाबू को इसकी जानकारी है। हम इस पर और ज्यादा रगड़-पट्टी न करें, अच्छा होगा। आंकड़ों का सही अर्थ यह था।

SHRI PRANAB MUKHERJEE: Mr. Chairman, Sir, at the very outset, I would like to express my gratitude to the hon. Members who have made their observations on the statement which I have made. Sir, first of all, I would like to clarify one position. I have made a statement on the basis of certain observations made outside and certain observations made inside the House that why such a Committee was appointed, what would have its impact on the Armed Forces. First of all, I would like to make it quite clear that we are not apologetic of appointing a Committee to look into the condition--economic condition, social condition, educational condition and cultural condition -- of the single largest minority group. Therefore, the notification itself mentioned about the Muslim minority. I do not know why Sushmaji is saying that we are trying to hide. I am not trying to hide it. I have stated in the very first part of my statement that this is the single largest minority group. I have quoted the figure of 13.8 per cent, 138 million people and in the Notification, which was issued on 9th March, 2005, they were mandating to make a survey to collect statistics to analyse the published data and to hire a database on the basis of which, if the

Government finds it necessary to intervene, so that the Government could intervene. Now, the question came, because in their anxiety, they have forgotten that the Armed Forces have a different status. Today, there are reservations for the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes. It is a Constitutional provision, originally meant for 10 years, but, subsequently, every Parliament, at the end of 10 years, extended it. But, it has not happened in the case of the Armed Forces. This reservation is not applicable in the Armed Forces. That is why I have stated that we do not recruit on the basis of race, religion, caste or even region. I will reply to the point where certain regiments' names have been mentioned. All these belong to pre-independent period. Nothing has been created after 1950. In 1950, when India adopted new Constitution and became a Republic, not a single regiment has been named after any region or after any race or after any group of people.

All these were during the British days. Somebody has also suggested and quoted a figure that it was there during pre-Independence. In our anxiety, we should not forget certain basic historic facts. There was the concept of parity as per the Ramsay MacDonald Award. There was communal parity in the Services, in the Armed Services. Apart from that reason, the areas from where the forces were recruited, substantial parts of those areas have gone to Pakistan. They were Punjab, undivided Bengal, and Assam, Therefore, recruitments in this country, for a long period of time, used to be confined only to limited pockets. Thereafter, we decided and worked out a formula. Almost every year, 50,000 people are retiring. So, in order to have representation from larger sections, larger areas, we decided that the number of vacancies to be filled in with the available male population of an area was to be divided, and a formula was worked out and when the recruitment rallies used to take place, it was tried to find out if we could have as many as possible nearer to the number. But it is not always possible. Therefore, in certain areas, necessarily known people are coming. But we have never done it on the basis of race, religion, caste or community. And this is the simple information we have given to the Sachar Committee twice. It is a High Powered Committee, and it is doing a good job because in certain other areas, you will have to intervene. If we have to intervene, we have to intervene on the basis of certain data. And it is not correct to say that the other weaker sections are not looked after. Why was the Mandal Commission appointed? Why were the recommendations of the Mandal

Commission to look after the interests of the OBC there? Why are the Commissions for the Scheduled Castes and Scheduled Tribes there? Because for various disadvantaged groups or sections, there should be special arrangements, and special provisions. And, for that, it was considered necessary. For the largest section of the minorities, more than 138 million people, if we want to have a survey by an Expert Group, and if the Survey is conducted, what is wrong in it? And it is not the Government's intention, I am making it quite clear here, that we are apologetic for appointing a Commission like that. We would like to examine them; we would like to give the statistics. But the Armed Forces were kept outside from the normal arrangement because of its own special significant contribution, its apolitical character, its disciplined character, and its secular character. That is why earlier the Armed Services were not brought within the purview of these so-called measures.

This time also we have requested them, one, we don't maintain that type of figures which you are asking for. Therefore, it would not be possible. Two, whatever figures were available, as I have mentioned in my Statement, in the Air force and in the Navy... In the Navy, the hon. Members who deal with the Defence would be knowing that apart from its military component, more than 50 per cent, almost 55 per cent, is the civilian component. In this civilian component, it is easy toget the figures. Whatever figures were available, we have given them, and whatever figures were not available, we cannot give them and told them that in Armed Forces we would not like to induct this type of survey. But, in respect of all other Ministries, all other Departments, this survey, this study, will continue. I am not using the word 'survey'. The study will continue. It is not only on the basis of the information to be supplied by the relevant Departments, as I have stated in my statement itself, they are also advised to research and to analyse the published documents and to arrive at what are the reasons, and what are the causes of the social backwardness. Therefore, Mr. Chairman, Sir, I do feel and I do agree with Jaswant Singhji that रगड़ना नहीं चाहिए। And I have no intention to रगड़ it. ...*(Interruptions)*...

I cannot speak Hindi.

MR. CHAIRMAN: What do you mean by रगड़ना?

SHRI PRANAB MUKHERJEE: I think it is rubbing if I understood it

correctly. *(Interruptions)* Oh, I do not know. My Hindi being so poor, I thought, it is rubbing. In Bengali, we use this word as rubbing.

So, I have no intention of taking it. That is why, definitely, I would request that these debates should come to an end. But, at the same time, please remember, that this is important. This study is important because sometimes, minoritism, Muslims and these types of phrases are not proper to be used. Government will try its best for the improvement of every section of the society. But, at the same time, situation demands that certain special attention has to be given. Why are we extending reservation to SCs/STs? It is because of our failure to bring them at the level which the Constitution makers thought that within a period of ten years, it would be possible. We failed to do it within a period of ten years. That is why, we are extending it by ten years at the end of every decade. These are temporary provisions, transitory provisions, but these provisions have become semi-permanent provisions till we reach our objective. Here also, we shall have to carry these large sections of the people and youth with us. In respect of certain issues which have come, I would say that these issues are under consideration though it is outside the purview of it, like Dalit Christians converted to Buddhists, Neo-Buddhists. About all these things, hon. Members are well aware that Government has set up a committee which has been mandated to look into it and their interests will be protected. Therefore, Government wants to take an overall view. But, the Armed Forces have their character and we are grateful to the Indian Armed Forces that they remained apolitical, they remained secular, they remained disciplined and they remained totally committed to the nation and to the country. Shri Jaswantji is fully aware of it because he occupied that room for many months. In that room, there is a भाव of the soldiers, a commitment, a small monogram which says, "I am a soldier; I have no religion; I have no caste; I have no creed. Even when I pray to God, I pray to God only for one thing that please give me the strength to discharge my duties to the cause of my nation." That is the motto of the Indian soldiers. And I am happy that they have retained that motto and, under no circumstances, we would like these objectives, these approaches, these characters of the Indian Armed Forces to be disturbed or to be jeopardised.

MR. CHAIRMAN: Shri Lalu Prasad Yadav.